Bihar Board Class 10 Hindi Vyakhya पद्य Chapter 2 प्रेम अयनि श्री राधिका

व्याख्या खण्ड

प्रश्न 1.
प्रेम बाटिका के दोऊ, माली-मालिन
व्याख्या-
प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक के प्रेम-अयनि श्री राधिका काव्य-पाठ से ली गयी हैं। इन पंक्तियों का प्रसंग राधा-कृष्ण के प्रेम-प्रसंग से संबंधित है।

कवि कहता है कि राधिकाजी प्रेमरूपी मार्ग हैं और श्रीकृष्णजी यानी नंद बाबा के नंद प्रेम रंग के प्रतिरूप हैं। दोनों की महिमा अपार है। कृष्ण प्रेम के प्रतीक हैं तो राधा उसका आधार है। प्रेमरूपी वाटिका के दोनों माली और मालिन हैं। दोनों की अपनी-अपनी विशेषता है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। एक-दूसरे के अभाव में पूर्णता नहीं हो सकती। प्रेम का साकार या पूर्ण रूप राधा-कृष्ण की जोड़ी है।

प्रश्न 2.
मोहन छवि स्सखानि लखि अब दग अपने नाहि।
अंचे आवत धनुस से छूटे सर से जाहिं।।
व्याख्या-
प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक के "प्रेम-अयनि श्री राधिका" काव्य-पाठ से ली गयी हैं। इस कविता का प्रसंग कृष्ण की छवि और रसखान की भक्ति से जुड़ा हुआ है।
कवि रसखान कहते हैं कि कृष्ण की मनोहारी छवि को निरख कर, देखकर आंखें वश में नहीं हैं। जैसे धनुष के खिंचते ही तीर सिर के ऊपर से गुजर जाता है और वह तीर वश में नहीं . रहता ठीक उसी प्रकार कृष्ण की छवि निहारकर आँखिया अब वश में नहीं रहती। कृष्ण के रूप-सौंदर्य में आँखें ऐसी खो गयी हैं कि सुध-बुध का ख्याल ही नहीं रहता। इसमें कृष्ण के प्रति रसखान की अगाध प्रेम-भक्ति और आस्था का ज्ञान प्राप्त होता है।

प्रश्न 3.
मो मन मानिक लै गयो चितै चोर नंदनंदा
अब बेमन मैं का करू परी फेर के फंदा
व्याख्या-
प्रस्तुत काव्य पक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक के 'प्रेम-अयनि श्री राधिका' काव्य-पाठ से ली गयी हैं। इस कविता का प्रसंग श्रीकृष्ण के चित्तचोर छवि से है। रसखान कृष्ण के रूप का वर्णन करते हुए कहते हैं कि मेरे मन के माणिक्य को, धन को, नंदबाबा के लाल कृष्ण ने चुरा लिया है। वे चित्त को वश में करनेवाले यानी चुरानेवाले हैं। अब मेरा मन तो उनके वश में हो गया है। मैं बेमन का हो गया हूँ। मुझे कुछ भी नहीं सूझता कि अब क्या करूँ। मैं कृष्ण के फेरे के फंदे में फंसकर लाचार हो गया हूँ। मेरा वश अवश हो गया है।
इन पंक्तियों में कृष्ण भक्ति की प्रगाढ़ता, तन्मयता, एकात्मकता एवं गहरी आस्था का सम्यक् चित्रण हुआ है।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 4.

प्रीतमविशोरचलिते नैनति लाग्यो
मन पवन चित्तोर, पलक ओट नहिं करि सकी।

व्याख्या-

प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक के "प्रेम-अयनि श्री राधिका" काव्य-पाठ से ली गयी हैं।
इस कविता का प्रसंग श्रीकृष्ण के पवित्र-प्रेम के प्रति गहरी आस्था से है।
कवि रसखान कहते हैं कि परम प्रिय नंदकिशोर से जिस दिन से आँखें लड़ी हैं या लगी – हैं। उनके पवित्र मन ने चित्त को चुरा लिया है। उनकी छवि को पलकों की ओट से दूर नहीं किया जा सकता। कहने को भाव यह है कि कृष्ण के प्रति रसखान की गहरी आस्था है, विश्वास है, भरोसा है, प्रेम की भूख है। जबसे आँखों ने नंदकिशोर का दर्शन किया है तबसे मन का चैन छिन गया है। आँखें अपलक उनके दर्शन के लिए लालायित रहती है। इन पंक्तियों में कृष्ण के प्रति गहरी प्रेम-भक्ति को दर्शाया गया है।

प्रश्न 5.

या लकुटी अख कामरिया पर राज तिहूँघुर की तजिडारौ!
आठहूँ सिद्धि नवोनिधि को सुख नन्द की गाइ चराइ बिसारौं।

व्याख्या-

प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक के करील के कुंजन ऊपर वारौं" काव्य पाठ से ली गयी हैं। इस कविता का प्रसंग श्री कृष्ण के विराट व्यक्तित्व के साथ नंदलाला की मोहक मनोहारी छवि की तुलनात्मक विवेचन से है।

रसखान कवि कहते हैं कि जो स्वयं तीनों लोकों का मालिक है, वह उसे त्याग कर एक छोटी-सी लकुटी और कंबल लेकर चरवाहा बना हुआ है। जिसकी सुख-सुविधा के लिये आठों सिद्धियाँ और नवनिधियाँ सदैव तत्पर रहती हैं, वह वैसे सुख का त्याग कर नंद की गायों को चराने में भूला हुआ है। यहाँ कृष्ण की लोक छवि की तुलना विराट लोकोत्तर छवि से की गयी है। कृष्ण स्वयं में सृष्टि के सृजक हैं, वे स्वयं सृष्टिकर्ता हैं। कितना अद्‌भुत है यह प्रसंग। कृष्ण अपने विराट व्यक्तित्व को भुलाकर सरल, सहज और मनमोहक छवि के साथ लोक-लीला में रमें हुये हैं। वे लोकोत्तर सुख-सुविधाओं को तजकर लोक जगत के बीच सहज भाव से बाल-लीलायें कर रहे हैं।

सारा संसार जिनके सहारे है वही व्यक्ति साधारण रूप में नंद के घर रहता है, उसकी गाय चराता है। रास-लीला किया करता है। स्वयं को उसने इतना भुला दिया है कि उसके अपने विराट व्यक्तित्व का अभाव ही नहीं होता। यहाँ कृष्ण के लोक कल्याणकारी मानवीय रूप का सफल चित्रण हुआ है। जिसमें गूढार्थ भी है, रहस्य भी है, साथ ही सहजता और सरलता भी है। यह कृष्ण के चरित्र की विशेषता है।

प्रश्न 6.

रसखानी कबौ इन ऑखिन सौं ब्रज के क्नबाग तड़ाग निहारौ।
कोटिक रौ कलधौत के घाम करील के कुंजन ऊपर वारौ।।

व्याख्या-

प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक के 'करील के कुंजन ऊपर वारौं' काव्य पाठ से ली गयी हैं। इन काव्य प्रसंग ब्रज भूमि की महिमा से जुड़ा हुआ है।
कवि ब्रज भूमि की महिमा का गुणगान करते हुये काव्य रचना करता है। कवि कहता है कि रसखान नानक कवि यानी स्वयं कब अपने आंखियों से ब्रज भूमि का दर्शन करेगा और स्वयं को धन्य-धन्य समझेगा। रसखान के मन के भीतर एक व्यग्रता है, अकूलता है, तड़प है, बेचैनी है, ब्रजभूमि के सौंदर्य को देखने की परखने की उस भूमि के बागों, वनों, तालाबों के दर्शन करने की।

https://www.evidyarthi.in/

इस प्रकार महाकवि रसखान ब्रजभूमि राधा-कृष्ण मय मानते हुये उसके प्रति आघात, आस्था और श्रद्धा रखते हैं। साथ ही उसकी पवित्रता, श्रेष्यठता और सौंदर्य के प्रति एक निर्मल भाव रखते हैं। करोड़ों-करोड़ इन्द्र के धाम ब्रज भूमि के कोटों की बगीचों पर न्योछावर है। ब्रज भूमि राधा-कृष्ण की लीला स्थली है, क्रीड़ा-क्षेत्र है, परमधाम है, सिद्ध लीला धान है।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/